विचार बिन्दु

केवल आत्मज्ञान ही हृदयात्मा को सच्चा आनंद प्रदान करता है। –रामतीर्थ

बीते वर्ष का हिंदी साहित्य परिदृश्य: कुछ नोट्स

एक परंपरा–सी बन गई है कि बीतते साल के आखिर में या आते साल के प्रारम्भ में उपलब्धियों और आकांक्षाओं का आकलन किया जाए। मेरा संबंध क्योंकि साहित्य से है, मुझे भी यह उचित लग रहा है कि बीते बरस में (और उससे थोड़ा पहले भी) हमारे हिंदी साहित्य का हाल–चाल कैसा रहा, इसकी पड़ताल करूं। अब जब मैं पीछे की तरफ मुड़ कर देखता हूं तो पाता हूं कि हिंदी में लिखा खूब जा रहा है। पहले से ज़्यादा लिखा जा रहा है। पहले से ज़्यादा मैं इसलिए कह रहा हूं कि हमारे यहां शिक्षा का प्रसार हुआ है और उसी के साथ सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ने की वजह से अपने लिखे को औरों के सामने लाना, उस पर उनकी सराहना पाना और समाज में अपने लिए एक विशिष्टता अर्जित करना अधिक सुगम हुआ है। पहले जहां हमें अपने लिखे को दूसरों के सामने लाने के लिए किसी संपादक या प्रकाशक की सहमति की ज़रूरत होती थी, आज उस भूमिका में हम सब स्वत: आ गए हैं। इस कारण जो भी लिखा जा रहा है वह कम से कम सोशल मीडिया के माध्यम से तो सबके सामने आ ही रहा है, और जो लोग अपने इस लेखन कर्म को अधिक गंभीरता से लेते हैं वे बाकायदा लेखक के रूप में प्रतिष्ठित भी हुए हैं। आज हमारे आस–पासऐसे अनेक रचनाकार हैं जिन्होंने अपने लेखन की शुरुआत सोशल मीडिया से की और यहीं लिख–लिखकर वे न केवल अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवा सके, उनके लिए एक बड़ा पाठक वर्ग भी तैयार कर सके।

जो लोग सोशल मीडिया तक सीमित नहीं रहना चाहते हैं आज उनके लिए भी अपने लिखे को प्रकाशित करवाने के अवसर बहुत बढ़े हैं। इधर कुछ बरसों से हमारे प्रकाशन जगत में एक नई रीत चल निकली है, जिसे मैं प्रकाशन की स्ववित्तपोषी योजना कहता हूं। आज ऐसे अनेक प्रतिष्ठान बाज़ार में आ गए हैं जो आपसे पैसा लेकर आपको किताब छापकर दे देते हैं। किताब की गुणवत्ता को परखने की उन्हें कोई ज़रूरत नहीं होती है, इसलिए पहले प्रकाशक नाम की जो बाधा किताब छपवाने में हुआ करती थी, अब वह भी हट गई है। फलत: प्रकाशित होने वाली किताबों की संख्या बहुत ज़्यादा बढ़ गई है। निश्चय ही इस कारण खूब सारा अपरिपक्व लेखन भी सामने आ रहा है, लेकिन फिलहाल मैं केवल संख्या की बात कर रहा हूं इसलिए इस चर्चा को बाद के लिए बचा कर रख रहा हूं।

लेखन की जहां तक बात है, हिंदी में कविताएं सबसे अधिक लिखी जाती हैं। कविता को लेकर अलग–अलग लोगों का अलग–अलग नज़रिया है। छंद और छंद विहीनता की बात छोड़ भी दें तो जहां बहुत सारे लोग सपाट बयानी को कविता मानने से इंकार करते हैं, वहीं अधिसंख्य नए रचनाकार गद्य की पंक्तियों को तोड़ तोड़कर लिख देने को ही कविता मान लेते हैं। उनमें से बहुत सारे अपने सोच और शिल्प को बदल कर गंभीर और बेहतर कवि भी बनते हैं, और बहुत सारे आत्म मुग्धता और सोशल मीडिया की लाइक्स से संतुष्ट रह कर उसी लीक पर चलते रहते हैं। वैसे ऐसा केवल कविता के मामले में ही नहीं अन्य बहुत सारी विधाओं के मामले में भी हो रहा है। अपनी देखी किसी घटना को कहानी का नाम दे देना या कुछ भी लिखे को व्यंग्य का नाम दे देना बहुत आम है। मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि हमारे उत्साही रचनाकारों ने कविता के बाद सर्वाधिक अन्याय व्यंग्य के साथ किया है। इधर गद्य की दुनिया में आजकल सर्वाधिक लेखन कथेतर में हो रहा है। इस बात पर बहुत सारी चर्चाएं भी हुई हैं कि आज का पाठक कथेतर पढ़ना और लेखक कथेतर लिखना क्यों पसंद करते हैं। सर्वाधिक रेखांकित करने योग्य नवाचार भी कथेतर में ही हो रहे हैं और बहुत सारे एकदम नए लेखक अपने लेखन की ताज़गी से इसी विधा को समृद्ध कर रहे हैं।

जब इतना सारा लिखा जा रहा है तो अपेक्षा यही होती है कि इस लिखे पर चर्चा भी हो रही होगी। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है। नए लिखे जा रहे पर ज़्यादा से ज़्यादा लोकार्पण आयोजनों में थोड़ी बात होती है, हालांकि वह बात औपचारिक और अवसरानुरूप प्रशंसात्मक ही होती है। प्रकाशनों में पुस्तक समीक्षा की जगह सिकुड़ते–सिकुड़ते लगभग अदृश्य ही हो गई है और दूसरी बात यह भी कि अपने समीक्षाकर्म को गंभीरता से लेने वाले समीक्षकों की संख्या भी निरंतर घटती जा रही है।

लेखकीय आयोजन के नाम पर या तो लोकार्पण समारोह होते हैं या फिर कवि गोष्ठियां। छोटे कस्बों और शहरों में तो आयोजन में सम्मानजनक उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए भी कवि गोष्ठी साथ में रखने की मज़बूरी होती है। अब बड़े शहरों में भी साहित्यिक आयोजन करना कठिन होता जा रहा है। वैचारिक रूप से समृद्ध करने वाले आयोजन बहुत ही कम होते हैं।

समीक्षा की जगह पुस्तक परिचय या फरमाइशी प्रशंसाओं ने ले ली है। बहुत कम समीक्षाएं ऐसी दिखाई देती हैं जो अपने नाम को सार्थक करती हैं। इसका एक परिणाम यह भी हो रहा है कि लेखक को जो थोड़ा बहुत मार्ग दर्शन मिल सकता था, वह भी नहीं मिल रहा है।

लेखकीय आयोजन के नाम पर या तो लोकार्पण समारोह होते हैं या फिर कवि गोष्ठियां। छोटे कस्बों और शहरों में तो आयोजन में सम्मानजनक उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए भी कवि गोष्ठी साथ में रखने की मज़बूरी होती है। अब बड़े शहरों में भी साहित्यिक आयोजन करना कठिन होता जा रहा है। वैचारिक रूप से समृद्ध करने वाले आयोजन बहुत ही कम होते हैं। अधिकांश आयोजन उत्सव धर्मिता की परिणति होते हैं। इधर जबसे जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल व्यावसायिक रूप से सफल हुआ है, देश भर में लिटरेचर फेस्टिवल्स की लाइन लग गई है। हमारे अपने प्रदेश में भी अनेक लिटरेचर फेस्टिवल होते हैं और प्राय: वे सभी जेएलएफ के पैटर्न पर होते हैं। भले ही उनमें बहुत ज़्यादा सार्थक और गम्भीर विमर्श न होता हो, यह स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए कि इनकी वजह से एक बड़ा समूह साहित्य और विचार के संपर्क में आता है।

इधर हिंदी में सम्मान और पुरस्कारों की तो जैसे बाढ़ ही आ गई है। सम्मान तो ख़ैर अब इतना सरल और सस्ता हो गया है कि बिना हर्र फिटकरी के हो जाता है। ऑनलाइन सम्मान का तो कहना ही क्या! अगर ऑफलाइन भी हो तो दो चार सौ रुपये में किसी का भी सम्मान किया जा सकता है, कर दिया जाता है। एक मानपत्र, एक शॉल, एक नारियल और एक माला। और क्या चाहिए? पुरस्कारों का हाल यह है कि पचास लोगों से पंजीकरण राशि लेकर दस लोगों को पुरस्कृत करने वाली अनेक दुकानें खुल गई हैं जो बाकायदा विज्ञापन देकर पुरस्कार के लिए आवेदन मंगवाती हैं – और लोग आवेदन करके पुरस्कृत होते भी हैं। बेशक ऐसे भी अनेक पुरस्कार हैं जिन्होंने अभी भी अपनी साख बचा रखी है, लेकिन छद्म पुरस्कारों की भीड़ ने उनकी गरिमा को भी आहत किया है।

यों तो पहले भी साल के आखिर में वर्ष भर के लेखन का लेखा–जोखा अख़बारों वगैरह में होता था, इधर कुछ वर्षों से अलग–अलग संस्थान साल भर की दस–बीस बेहतरीन किताबों की सूची ज़ारी करने लगे हैं। वैसे तो यह बहुत अच्छी बात है लेकिन इन सूचियों को देखकर यह लगता है कि सारी अच्छी किताबें राजधानी के दो–चार प्रकाशकों के यहां से ही आ रही हैं। यथार्थ यह नहीं है। दूरस्थ शहरों और कस्बों के छोटे और लगभग अनाम प्रकाशकों के यहां से भी अच्छी किताबें आती हैं लेकिन बड़े प्रकाशनों में छपने वाले लेखक उनका नोटिस लेना भी ज़रूरी नहीं समझते। हो सकता है यह उनकी भी सीमा हो जो ये सूचियां बनाते हैं। लेकिन अगर अनुमानत: दो सौ प्रकाशकों के यहां से हर साल छपने वाली लगभग दो हज़ार किताबों में से दो–तीन प्रकाशन गृहों की बीसेक किताबें ही चर्चा में आती हैं तो कहीं न कहीं कोई गड़बड़ तो है, और इसे ठीक किया जाना ज़रूरी है। एक तरीका यह भी हो सकता है कि जो भी गंभीर पाठक हैं वे अपनी पढ़ी बेहतरीन किताबों की चर्चा किया करें ताकि सबका ध्यान उनकी तरफ जाए।

साहित्यकारो की दुनिया में विवाद न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। सोशल मीडिया के प्रसार वाले इस समय में विवाद की आग में दो चार लकड़ियां वे भी डाल देते हैं जिन्हें उस विवाद का एबीसीडी भी पता नहीं होता है। ज़्यादातर विवाद ऐसे होते हैं जिनके होने का कोई औचित्य नहीं होता। मैं तो मानता हूं कि ये विवाद हमारी नीरस ज़िंदगी को थोड़ा रोचक और रोमांचक बना देते हैं, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

लेखन की बात करते हुए इस बात की चर्चा करना बहुत ज़रूरी है कि भारत सरकार ने हाल में बुक पोस्ट की रियायती व्यवस्था को ख़त्म करके पुस्तकों–पत्रिकाओं के प्रेषण पर बहुत कठोर आघात किया है। जब साठ–सत्तर रुपये में भेजी जाने वाली सामग्री के लिए दो सौ सोलह रुपये खर्च करने पड़ेंगे तो कल्पना की जा सकती है कि हमारे प्रकाशन जगत पर और साहित्यानुरागी पाठकों पर इसका क्या और कैसा प्रभाव पड़ेगा। सरकार का अकेला यह कदम हमारे पढ़ने–लिखने को बहुत गहरा आघात पहुंचाएगा।

जहां तक राजस्थान की बात है, यहां सरकार बदलने के कारण पिछली सरकार द्वारा गठित विभिन्न भाषाओं की अकादमियां अब मृत प्राय: है। जो थोड़े बहुत पुरस्कार व अनुदान–सहायता लेखकों को मिलते थे वे सब बंद हैं। नई सरकार की प्राथमिकता में अभी अकादमियों के अध्यक्ष बनाने का काम नहीं है। वैसे भी रणनीति की दृष्टि से सरकारों को यही सुरक्षित लगता है कि बर्र के इस छत्ते में जाते–जाते ही हाथ डाला जाए। सो अभी अकादमियां केवल नाम भर को हैं। सेहत साहित्यिक संस्थाओं की भी बहुत अच्छी नहीं है। इसलिए जो हो रहा है वह लेखकों के व्यक्तिगत प्रयासों से ही हो रहा है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

जीनोटाइप, फिनोटाइप और जीवन

डॉ. रामावतार शर्मा

आनुवांशिकता एक जटिल विषय है और इसका आधार जीन स्वयं में एक जटिल संरचना होती है जो कि डीएनए नामक एक अतिसूक्ष्म प्रोटीन यौगिक में निर्मित होती है। जीन को हिंदी में वंशाणु, पित्राणु या जनुक कहा जाता है। यह डीएनए का एक हिस्सा होती है जिसके द्वारा माता–पिता के कई गुण या उनका कोई युगल उनकी संतानों में भेजा जाता है। सामान्य उदाहरणों के रूप में बालों का रंग, आंखों की बनावट या रंग, हाथ पैरों की बनावट या आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। जीन आनुवांशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य करता है। हमारे शरीर में धागेनुमा दो सूक्ष्मदर्शी संरचनाएं होती आपस में लिपटी हुई होती हैं जिन्हें क्रोमोसोम कहा जाता है। जीन इन्हीं क्रोमोसोम्स में हर एक कोशिका के केंद्रक (न्यूक्लियस) में स्थापित होती हैं। मनुष्य के शरीर की कोशिका में 46 क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते है परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटी होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालांकि पुत्र को जन्म न देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताड़ित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक यानि जन्म से लेकर कोई 35 वर्ष की उम्र तक एक सक्रिय मनुष्य किसी जानलेवा दीर्घकालिक बीमारी का शिकार साधारणतया नहीं होता है। यही कारण है कि इस प्राकृतिक प्रक्रिया में वे जीन जो हृदय रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, अल्जाइमर रोग, डायबिटीज तथा कैंसर जैसे रोगों के लिए जिम्मेदार हो सकती हैं वे मनुष्य शरीर से हटी नहीं है और प्रजनन काल के बाद की उम्र में ये रोग शरीर में विकसित हो सकते हैं। कुछ जीन ऐसी होती है जो कुछ लोगों को शतायु तक ले जाती हैं जिन्हें दीर्घायु जीनोटाइप कहा जाता है परंतु ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। इसके विकल्प में हमारे पास फिनोटाइप है जिसमें हम अपनी जीवनशैली द्वारा वह बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो इन चंद लोगों को जीनोटाइप द्वारा प्राप्त हुआ है। याद रखिए, प्रकृति के नियमों के अनुसार मां बाप बनने की उम्र के बाद आपको अपना जीवन स्वयं ही संभालना होता है। एक विशिष्ट जीन होती है जिसे आपो ई कहा जाता है। इसके तीन रूप और होते हैं जिनको ई2, ई3 और ई4 कहा जाता है। आपो ई का मुख्य कार्य कोलेस्ट्रॉल के लिवर में निर्माण और फिर कोशिकाओं तक परिवहन होता है। आपो ई ज्यादातर लोगों में ई3/ई3 का युगल होता है। अब यदि किसी व्यक्ति के जीन युगल में एक या फिर दोनों ई4 घटक हों तो इस व्यक्ति में अल्जाइमर रोग होने की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं। इसके विपरीत यदि ई2/ ई2 घटक हों तो डिमेंशिया (मनोभ्रंश) की संभावनाएं नगण्य–सी हो जाती हैं और दीर्घायु होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। दूसरी तरफ ई4 की दोनों प्रतिलिपि होने पर व्यक्ति के अल्पायु होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसके अलावा दो अन्य जीन भी होती हैं जिनके धारक हृदय रोग से प्रभावित नहीं होते हैं। परंतु ऐसा नहीं है कि हमारी उम्र सिर्फ जीनोटाइप ही निर्धारित करते हों। हमारे पास जीवनशैली के रूप में एक बड़ा विकल्प है जिसके द्वारा हम जीन की अभिव्यक्ति को बदल सकते हैं और अधिकतर अवसरों में सफलतापूर्वक सामान्य और दीर्घकालिक जीवन जी सकते हैं। इस क्रिया को फीनोटाइप कहा जाता है जिसमें जीन कैसे कार्य करे इस बात का निर्णय लिया जाता है। फोक्सो 3 नामक एक सर्वव्यापी जीन होती है जिसके द्वारा किसी अन्य जीन की अभिव्यक्ति को मुखर या मंद किया जा सकता। जीवनशैली द्वारा फोक्सो 3 को सक्रिय करने पर यह शरीर की अन्य जीन्स को पुनर्निर्माण, मरम्मत, कोशिकाओं की साफ सफाई और उन्हें स्वस्थ रखने के कार्यों के प्रति उत्साहित करती है। इसके अलावा यह कैंसर के विकास को भी रोकती है। जीवन में शरीर और विचार दोनों में लचीलापन रखिए। गतिमान रहिए। मांसपेशियों की शक्ति को बनाए रखने के लिए हल्का व्यायाम कीजिए। पैदल चलिए। भोजन मुख्यतया वनस्पति आधारित, सी वीड या मछली के कुछ उपयोग वाला होना चाहिए। कुछ न कुछ अंकुरित या फिर माइक्रोग्रीन का सप्ताह में दो तीन दिन उपयोग कीजिए। हरे पत्तों का साग और मानसिक उत्तेजना से बचाव जैसे सामान्य उपाय बड़ा लाभ प्रदान करते हैं। सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ भोजन को जोड़ना और रोजाना 7–8 घंटे की नींद फोक्सो 3 को क्रियाशील करने में सहायक होती है। अंत में, जीवन आपका है इसलिए इसे कैसे और कितना जीना है इसका निर्णय भी आप को ही करना है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

वन प्राणी ने किया बकरी का शिकार

बौंली–बामनवास। क्षेत्र के लाखनपुर ग्राम पंचायत गांव में रविवार को प्रात: 11 बजे दिन दहाड़े ही एक वन प्राणी ने बकरी का शिकार करके मौत के घाट उतार दिया। इस दिनदहाड़े बकरी के शिकार करने को लेकर ग्रामीणों में भय व्याप्त हो गया एवं वन प्राणी को आबादी क्षेत्र से दूर भेजने के लिए वन विभाग को सूचित किया। लाखनपुर के ग्रामीणों ने बताया कि रविवार को 11 बजे दिनदहाड़े ही पैंथर ने गांव के पास ही हनुमान माली की बकरी का शिकार करके फाड़ दिया जिससे उसकी मौत हो गई। इस घटना से ग्रामीणों में दहशत व्याप्त हो गई। वे अपने जानवरों की सूरक्षा के इतंजाम करने लगे। सूचना पाकर बौंली रेंज वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची एवं मौके पर जांच करके वन प्राणी को लकड़बग्घे (जरख) के पगमार्क पाए जाने की पुष्टि की एवं बताया कि शिकार करने वाला वन प्राणी पैंथर नहीं लकड़बग्घा (जरख) था। लाखनपुर गांव अरावली पर्वत श्रृंखला वन क्षेत्र के नजदीकी बसा होने के कारण अक्सर वहां वन्य जीव आसपास आते जाते रहते हैं।

29 ट्रेनें 60 दिनों तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी ठहराव

जोधपुर, (कासं)। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल से चलने व गुजरने वाली करीब 28 ट्रेनें अगले 60 दिनों तक सूरत रेलवे स्टेशन पर ठहराव नही करेगी। सूरत रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य के तहत एयर कॉनकोर्स के निर्माण हेतु लिए जा रहे ब्लॉक के कारण इन ट्रेनों का सूरत की जगह उधना रेलवे स्टेशन पर ठहराव सुनिश्चित किया गया है।जोधपुर डीआरएम पंकज कुमार सिंह के अनुसार सूरत स्टेशन से होकर गुजरने वाली यह ट्रेनें 7 जनवरी से 8 मार्च तक सूरत की बजाय उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा ने बताया कि किसी भी असुविधा से बचने के लिए यात्री उधना स्टेशन पर इन ट्रेनों के आगमन व प्रस्थान का समय नेशनल ट्रेन इंक्वायरी सिस्टम (एनटीईएस) अथवा रेलवे वेब साइट पर देख सकते हैं।

ट्रेनें जो सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी ठहराव : ट्रेन 14707,लालगढ़–दादर रणकपुर एक्सप्रेस 7 जनवरी से 3 मार्च,ट्रेन 20944,भगत की कोठी–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक 10 जनवरी से 7 मार्च,ट्रेन 20966,भगत की कोठी–बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट 11 जनवरी से 1 मार्च,ट्रेन 19056,जोधपुर–वलसाड साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी 5 मार्च तथा ट्रेन 22473, बीकानेर–बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट 13 जनवरी से 3 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

इसी तरह ट्रेन 16588,बीकानेर–यशवंतपुर एक्सप्रेस द्वि साप्ताहिक एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च,ट्रेन 14806, बाड़मेर–यशवंतपुर साप्ताहिक एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 19028, जम्मूतवी– बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक एक्सप्रेस 13 जनवरी से 3 मार्च, ट्रेन 21902,बाड़मेर–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च व ट्रेन 22932, जैसलमेर बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

■ किसी भी असुविधा से बचने के लिए यात्री उधना स्टेशन पर इन ट्रेनों के आगमन व प्रस्थान का समय नेशनल ट्रेन इंक्वायरी सिस्टम (एनटीईएस) अथवा रेलवे वेब साइट पर देख सकते हैं।

पुनर्विकास कार्य के कारण ट्रेन 22916, हिसार–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च,ट्रेन 12998, बाड़मेर–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 22664, जोधपुर–चैन्नई एग्मोर साप्ताहिक एक्सप्रेस 14 जनवरी से 4 मार्च,ट्रेन 22738, हिसार–सिकंदराबाद द्वि साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 7 मार्च तथा ट्रेन 22724, श्री गंगानगर– नांदेड़ साप्ताहिक एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर रुकेगी।

इसी प्रकार ट्रेन 07054, लालगढ़–काचीगुड़ा साप्ताहिक एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च,ट्रेन 14807, जोधपुर–दादर त्रि साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 7 मार्च,ट्रेन 16507, जोधपुर बेंगलुरु द्वि साप्ताहिक एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 16533, जोधपुर– बेंगलुरु साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी से 5 मार्च,ट्रेन 20943, बांद्रा टर्मिनस–भगत की कोठी साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 12997, बांद्रा टर्मिनस–बाड़मेर साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 8 जनवरी से 5 मार्च, ट्रेन 14808, दादर–जोधपुर त्रि साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी से 8 मार्च,ट्रेन 16587,यशवंतपुर–बीकानेर साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 2 मार्च व ट्रेन 14708, दादर–लालगढ़ रणकपुर एक्सप्रेस 8 जनवरी से 8 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर रुकेगी।

भरतपुर के आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज को संक्रमण से बचाने के लिए परिजनों को खुद लाना पड़ा क्रेडल

भरतपुर, (निस)। मैन पावर की कमी से जूझ रहे आरबीएम अस्पताल में आए दिन मरीज के परिजनों को ही अपने मरीज की चिकित्सा सुविधा के लिए अपना सहयोग देना पड़ जाता है। ऐसा ही नजारा उस वक्त देखने को मिला जब आग से गंभीर रूप से झुलसने पर एक महिला को इलाज के लिए जिला आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया। जहां आईसीयू वार्ड में बर्न मरीज के लिए क्रेडल ना होने पर आईसीयू वार्ड के स्टाफ ने मरीज को देखने आए लोगों को ही दूसरी बिल्डिंग में छठवी मंजिला पर क्रेडल लाने के लिए भेज दिया। हालांकि क्रेडल लाना भी मरीजों के परिजनों के लिए आसान साबित नहीं रहा।

सीआईसीयू में क्रेडल ना होने पर मरीज के परिजनों को दूसरी बिल्डिंग में छठवी मंजिला से उतारकर पहली बिल्डिंग के वार्ड में लाना पड़ा क्रेडल।

आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज के लिए परिजनों को अस्पताल के दूसरे ब्लॉक में बनी छठी मंजिल के बर्न वार्ड में जाना पडा जहां लोहे के जाल जिसे क्रेडल कहा जाता है। उसे अपने कंधों पर रखकर छठी मंजिल से नीचे आकर वापस ए ब्लॉक की मंजिल पर लाना पडा। जबकि या तो आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में बर्न मरीजों को क्रेडल की व्यवस्थाएं रखनी थी या फिर अस्पताल के स्टाफ को परिजनों के साथ भेजना चाहिए था। प्राप्त जानकारी के अनुसार नदिया मौहल्ला निवासी मीरा शर्मा अपने घर में कडाके की सर्दी से बचाव के लिए लकडियों में आग लगा कर सेक रही थी। जहां असंतुलित होकर वह जलती लडकियों में गिर गई। जिसमें महिला गंभीर रूप से झुलस गई।

■ अस्पताल में मैन पावर व मशीन पावर की कमी के चलते आए दिन मरीज के परिजन अपने मरीज को कंधों, व्हील चेयर, ट्रॉली पर खुद ले जाते अक्सर दिखाई देते हैं।

जिसे परिजनों ने पडौसियों की सहायता से इलाज के लिए जिला आरबीएम अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां महिला की गंभीर हालत देख चिकित्सकों ने उसे आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक में बने सीआईसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया। लेकिन वहां बर्न मरीजों को संक्रमण से बचाने के लिए आवश्यक क्रेडल नहीं होने पर स्टाफ ने मीरा शर्मा के साथ आए परिजन व उसके पडौसियों को दूसरे ब्लॉक की छठवीं मंजिल पर क्रेडल लाने के लिए भेज दिया। जिस पर मरीज के परिजन अपने कंधों पर रखकर क्रेडल को छठवी मंजिला से उतारकर वापस ए ब्लॉक में लेकर आए। हालांकि मरीज के परिजनों ने इसे लेकर कोई शिकायत नहीं की और खुशी खुशी कंधे पर लटकाकर क्रेडल लेकर पंहुचे। अस्पताल में मैन पावर व मशीन पावर की कमी के चलते आए दिन मरीज के परिजन अपने मरीज को कंधों, व्हील चेयर, ट्रॉली पर खुद ले जाते अक्सर दिखाई देते हैं।

कदम से कदम मिले स्वयं सेवकों के

मकराना, (निस)। डीडवाना कुचामन जिले के ग्राम पंचायत जूसरी ग्राम में रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर पथ संचलन निकाला गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवको ने कदम से कदम मिलाकर पथ संचलन निकाला।

इस दौरान रास्ते में जगह जगह पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया । पथ संचलन ग्राम के मुख्य मार्गों से होकर गुजरा जिसमें युवा, बुजुर्ग, बच्चों सहित हर उम्र के स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में शामिल हुए। संचलन में शामिल स्वयंसेवक कतारबद्ध होकर कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे जिनके आगे घोषवादन हो रहा था । कार्यक्रम में संघ के मुख्य वक्ता रुद्र कुमार जी ने बौद्धिक विकास व सामाजिक एकता पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि भारत देश का इतिहास बड़ा गौरवमय रहा तथा समाज में जागरूकता का संचार हो रहा है, यह पथ संचलन हिंदू समाज में आत्मविश्वास व जागरूकता को बढ़ाने का प्रतीक है।

मुख्य वक्ता ने जीजाबाई के जयंती पर उनके बारे में बताया तथा सभी मातृ शक्ति जीजाबाई के जीवन से कुछ सीखे । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री रघुवरदास महाराज श्री 108 श्री बनवारीशरण दास महाराज रहे।

कार्यक्रम में माननीय खंड संघ चालक महावीर जी उपस्थित रहे। संचलन के स्वागत के लिए ग्रामवासियों ने फूलों की वर्षा तथा रंगोलिया बनाई गई और पथ संचलन के मार्ग पर स्वागत द्वार भी बनाए गए।

राशिफल

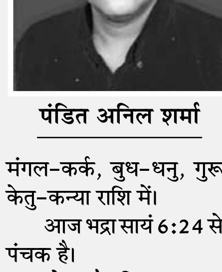

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 6 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सायं 7:06 तक, परिघ योग रात्रि 77:05 तक, वणिज करण सायं 6:24 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–मीन, मंगल–कर्क, बुध–धनु, गुरू–वृष, शुक्र–कुम्भ, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज भद्रा सायं 6:24 से आरम्भ होगा। आज गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:57 से 11:15 तक, चर 1:50 से 3:08 तक, लाभ–अमृत 3:08 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:45

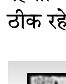

मेष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों मेंउचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

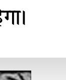

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा।

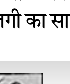

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

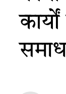

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

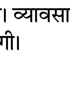

धनु
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

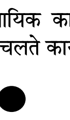

मकर
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ
घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

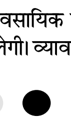

मीन
मानसिक तनाव दूर होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।